









.



माटे बरवानी अपेजाए सबै नर्ग साटि अने प्रताय है अने प्रता-दुनी जपेजाए तथा सनज अनादि मनीन जीवने अभेषंतनी योग्यता-रूप परिणातिनी अपेजाए ने अनादि अने कृतकार्य है.

पक्ष. १७-हे महाराज! आप जीवने, अनादि सहज मळरूप कर्मवेषनी योगाना कहोछो ने हो स्वरूपवाळी हो?

उत्तर-हे भव्य ! ने योग्यना जीवनुं कर्षवंथपणे परिणमन परि-णाम स्वन्य छे. जीव पदार्थ परिणामी छे, नेथीज नेने बंब मोक्ष होवा घंटे छे. जो परिणामी न होय तो मुक्ति के संसार बंने न होय; ते वैने जीवने होय छेः अनेग जड पटार्थने होना नथी. परिणामी न कहेवाय के जे शुद्ध वस्तु होय, पण समय समय उत्पाद व्यय ने स्थि-तिरुप त्रणे प्रकारनी वर्तनामय होय. जे पदार्थमां ए त्रण गुण न होय ते पदार्यनो त्रण भुवनमां ने त्रणे काळमां अभावन होय. ने अमत्-पदार्घ कहेवाय, ने नेनेज अपरिणामी जाणवो. परिणामी आत्मा खत्याद् व्यय श्रीव्यमय छे नेथी जेम घट जाणवापणे उपजे नेम कीड अंग्रे उपज्या करे छे, सर्व अंग्रे सर्वया नवापणे कोड़ काळे उपजनो नयी अने जेम पट ज्ञानना नागशी घट ज्ञानी याय छे तेम कोड अंगे विणस्या करे छे, सर्व अंगे सर्वया कोड काळे नाग पामनो नयी. तेमज जे काळभेदं घटपटने जाणतो उभयकाळ जानीपणे रहे छे तम कोइ अंग्रे स्थायी बन्यो रहे छे, मर्व अंग्रे सर्वया स्थिति रहेती नयी. आ प्रमाणे उत्पाद व्यय ने स्थितिमयपणुं ने परिणाम, अने एची परिणाम जेने होय ने परिणामी सदृस्तु, जे अपरिणामी ते असदृस्तु,



भावो तो आजाग्राण हे. तेम आ अनादि भावो पण आगमगाण छे, अन्यथा तेमां घणो विरोध उपने नेवुं हो. नेम स्पोद्य विना दिवस होतो नधी अने सूर्योस्त विना रापि होती नथी एम प्रसिद्ध देखाय छ अने अनुमानथी पण सिद्ध थाय है के चंद्र सूर्यनी पछी दिनसने रात्रि छे, पण तेम नथी; जो तेम होय तो दिन रातिकप काळ विना चंद्र सूर्य क्यारे थया ? ते विचारी परंतु काळ पण अनादि छ अने चंद्र सूर्यादिक ज्योतिष्कोना विमानी पण अनादि छे. ते विमानीना स्वामीपणे उपजना देवता जे पूर्वना होय छे ते पोतपोताना आयुष्यने पूर्ण करीने चवे छे अने नया नवा पुण्यवान् जीवो उपने छे. तेओ पोताना आयुष्य पर्यंत ते विमानतुं स्वामीपणुं भोगवे छे. ए रीते देवता फरता जाय छे पण विमान वदलाता नथी; विमान तो अनादिना एना एज छे. अने ते निरंतर गमन क्रियात्राळा वर्से छे. आ अही द्वीपमां स्थिरपणे रहेता नथी। भूलोकमां जे मकाश थाय छे ते तेना विमानोनी ज्योतिथी थाय छे; सूर्योदिक विमानमां रहेनारा देवताओना शरीरनो आ मकाश नथी। सूर्यना विमाननो मकाश आ जंबुद्दीपमां तेना विमानथी पूर्व तरफ ने पश्चिम तरफ साधिक ४७००० योजन सुधी होय छे. तेथी अधिक क्षेत्र तेनाथी प्रकाशतो नथी. एटले ४७००० नी अंदर आवे त्यारे ते छग्यो कहेवाय छे अने ४७००० थी दूर जाय त्यारे आथम्यो कहेवाय छे. तेज रात्रि दिनना विभागतुं तरण छे. ए सर्व अनादि लोकस्थिति स्वभावधी थाय छे माटे . दि भावोमां पूर्व के पश्चिमनो विभाग होतो नथी. तथी आत्मा ?,



नेओ सर्वतज हो. जेनो अन्यंत अभाव हो ते कोइकाले पण भारणे हाता होयज नही—सर्व काले अहाताज होया जेम आकामनुं फुला पाटे जीव प्रमुख पदार्थोंनी आदि नथी—ते अनादिपणेज हाता एटले वियमान हो।

प्रक्ष. २२-प्रयार्थ जन्दनो अर्थ शुं थाय छे?

उत्तर—'यथा' नाम जेम वर्ते हो, 'अर्थ' नाम परार्थ—तेम जाण माने ते 'यथार्थ.' जे सादिन सादिएणे, अनादिने अनादिएणे अने स्वाभाविकने स्वाभाविकपणे जाण माने ते 'यथार्थ ज्ञानी ' अने जे अनेराने अनेरो जाणे—होय ते करतां जुदा स्वरुपे जाणे ते 'अज्ञानी.'

प्रश्न. २३ — हे महाराज! आत्मादिक पदार्थनी आदिनो अत्यंत अभाव सिन्द होवाधी जगत्नो छिष्टियाद सर्वथा टकी शकतो नथी पण 'आ जगत् इश्वरकृत छे 'एम दुनियामां प्रसिद्ध छे तो तेनो सर्वथा निषेध केम करी शकाय ? तेथी प्रभूतकाळ अगाउ इश्वरे आत्मादिक जगत्ना पदार्थो रच्या छे तेथी कोइ तेनी आदि जाणी शकतुं नथी, तेने छीधे अनादि कहेवाय छे. पण इश्वरे जे काळे जीवादि रच्या ते काळनी अपेक्षाए तो ते सादि छे, पण अत्यंत अनादि नथी—एम मानवामां कांइ दोप छे ?

उत्तर—हे भन्य ! जो तमारा कह्या प्रमाणे अति प्रभूतकाळ पहेलां पण इश्वरे आत्मादिक पदार्थ बनान्या होय ' तो ' तेम मानवामां मी-सना अभाव विना बीजी कांइ हरकत नथी। केमके इश्वरकृतने इश्वर-



पक्ष २९-हे महाराज ! ते " तथाभन्यता " शुं छे ?

**उत्तम-हे भद्र ! ते " तथाभव्यता " अनादिनो जीवोने मोक्ष** गमननी योग्यतारूप पारिणामिक भाव छे. ते मोक्षनी योग्यता सर्वे भन्य जीवोने स्वरूप मात्रे तो तुल्य छे पण सर्वे जीवनी समकाळे परिपक्व थती नथी; जुदे जुदे काळे परिपाक पामे छे. ते काळभेदे पाकवारूप विचित्रतावाळी होवाथी तेने तथाभन्यता कहेळी छे. 'तथा' एटले ते ते पोतपोताना पाकवा योग्य क्रमागत काळने पामी पामीने पाकवाना स्वभाववाळी एवी जे "भव्यता " एटले मोक्षगमननी योग्यता ते " तथाभन्यता " ते जीवने जुटा जुटा विचित्र पकारना काळांतरे पाके छे, तेथी सर्व जीवोने सम्यग् दर्शनादि गुणोनी तथा मोक्षनी प्राप्ति समकाळे थती नथी. जो सर्व जीवोनी योग्यता साथे पाके तो गुण पाप्ति ने मोक्ष प्राप्ति सर्वने एक साथे थाय, पण तेम थतं नथी; माटे ए ज्यारे पाके त्यारे तेना जोरथी मिथ्यात्वादि पाप-कर्मतुं तथा अनादि कर्मवंधनी योग्यतानुं वळ घटी जवाथी जीव ज्ञुद्ध धर्म पामी शके, अने ज्ञुद्ध धर्म पामवाथी जन्म जरा मरणादि दुःखोनो अंत करी अजरामर पणुं पामे.

प्रश्न २०-हे महाराज! ते तथाभव्यता क्यारे पाके छे ? अने ते स्वभावेज पाके छे के कोइ साधन सेक्वाथी पाके छे ?

उत्तम-हे भव्य !जीव ज्यारे पोताना चरम पुर्गळ परावर्तनरूप काळमां आवे त्यारे कोइ जीवनी तथाभव्यता स्वभावेज पाके छे अने घणा जीवोनी उपायना सेवनथी पाके छे.



तैजस ४, ने कार्मण ५, ए पांच शरीरपणे तथा एकेंद्रियादि सर्व जीनोए श्वासीश्वासपणे अने द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय ने पंचेंद्रिय जीनोए भाषापणे तेमज पंचेंद्रिय एवा नारकी तिर्थंच मनुष्य ने देवताओए मनपणे ग्रहण करेला एवा पण अनंतानंत स्कंघो छे. ते सर्व पुर्गळोने कोइ एक जीव आहारक शिवायना वाकीना चार शरीरमांथी कोइ एक शरीरपणे, अथवा भाषापणे, अथवा श्वासोश्वासपणे, अथवा मनपणे प्रथम अपूर्वपणे ग्रहण मोचन करवावडे जेटला काळे ग्रही सुकी रहे तेटला काळने एक द्रव्य पुद्गळ परावर्तन कहीए. आवा पुर्गळ परावर्तन दरेक जीवने पूर्वे अनंता थयेला छे.

प्रश्न ३२-हे महाराज ! जीव चरम पुद्गळ परावर्तनमां शी रीते आवी शके ?

उत्तर—अनादि सहज परिणामथी जीव वे मकारना स्वभाववाळा होवाथी वे जातिना छे. एक भवीजातिना ने बीजा अभवी जातिना. तेमां जे भवीजातिना छे तेमनामां मोक्षे जवानी योग्यतारूप स्वभावनी सत्ता अनादिथी रहेळी छे, तेथी तेमनी भवपरिणाति पलटाय छे; ने अभवीमां मोक्षे जवानी योग्यता न होवाथी तेमनी भवपरिणाति वद-छाती नथी; अनादिथी जेवी छे तेवी ने तेवीज रहे छे. एटले तेमना अनागत पुर्गळ परावर्तन ओछा थवाना नथी. भवीजीवोनी भवपरि-णाति वदलाय छे तेथी तेमना अनागत पुर्गळ परावर्तन ओछा ओछा कता जाय छे. तेमां भवीबोनी पण अनादिथी तो कर्मवंदनी योग्यता अतिशय अतिशय उत्कृष्ट संग्लिष्ट परिणाममय घोर मिण्यान्य अवि-



पांकेळी न होवाथी यथार्थ तत्त्वजिज्ञासाना तेमने अभाव होय छेर चरम पुर्गळ परार्वत्तनमां आवेळ जीवन सद्धर्मने योग्य थाय छे.

मश्न ३३-हे महाराज! आपणे चरम पुर्गळ परावर्तनमां आ-च्या छीए के नहीं ? ते केम समजाय.

उत्तर—हे भव्य ! ते समजवा माटे आपणे ज्ञानदृष्टिए पोतानुं अंतःकरण तपासनुं के आपणने मोक्ष पामवानो अभिलाप, धर्म करवानो अभिलाप अने तत्त्व जाणवानो अभिलाप निव्धांज पारमार्थिक भावथी उत्पन्न थयो छे के उपरचोटीयो छळ परिणामवाळो अभिलाप छे ? एम सत्यपणे आत्मसाक्षिए पोताना हृदयमां वारंतार तपामवां वर्णे अभिलाप परमार्थ रूपे छे एम भारो तो जाणवुं के आपणे चग्म पुर्गळ परावर्तनमां वर्तां ए छीए.

मक्ष ३४-हे मदाराज ! आपे मथम कहुं के 'तथाभव्यता की-इक्की रवनाने पाके ने पणानी तो उपायसेवनथी पाके छे 'तो तेने प्रसारको उपाय शुं छे ?

उत्तर-तेन प्रतिपानी उपाय आ मनाणे छे-नवम तो पाँगानाः इद्दरण प्री निर्मार करती के-पाणि जात्मा निरापार है, अगर-ण है इस्त्य छे, देव है आ कत्मणं पण गेणदिक के राजादिकती २०११ के हिन्द सी पुत्र जनती भगकादि कोड मार्क स्वणक्ती अके नेव स्व नेवता होते पण ने आपदा आत्मा को है, उपार आ ज रूपा ने श्वर होते यह शहरा नवीं नो प्रश्नी प्राम्मकी आपदामां सी ने शास कु हे बेज यह शहरी मुख्यीत्माम अन्तिन्ती, सिद्द निर्मे



जन्य परमानंद्रमय शुभ परिणाम प्राप्त थया नहोता, तेवा प्राप्त थवाशी तेने "अपूर्व करण " कहे छे. ए अपूर्व करणनी प्राप्ति थवाशी जीव तेना वडे ग्रंथिनो भेद करे. " ग्रंथि " ते अति निविड घन कठिन दुर्भेद्य मोक्षथी विमुख राखनार मिथ्यात्वना महा राग द्वेप ने अज्ञानरूप परिणाम जाणवा तेनो भेद प्रथम कोइ काळे कर्यो नर्था मार्गानुसारी जीव अपूर्वकरणरूप तीव परिणामनी धारावडे भेदे-विदारे

प्रश्न. ३६- हे महाराज! आपे जणान्युं के 'ग्रंथि ते पिथ्यात्वना महा रागादि परिणाम छे ' तो भिथ्यात्व ग्रुं छे ?

उत्तर-भिध्यात्वतुं स्वरुष में उपर समजाव्युंज छे, उपरांत एटछुं विशेष समजवुं के-आत्माने असद् देव गुरु धर्ममां तेमज विषरीत वस्तु-वादमां श्रद्धा-रुचि उपजावी तेने विषे रागी करनार, तेमज सद् देव गुरु धर्ममां अने सुवस्तुवाद विषयमां अश्रद्धा-अरुचि उपजावी तेमने विषे द्वेषी करनार मोहनीय कमना उदयनो जे पारिणाम ते " मिध्यात्व" छे.

मश्र. ३७-हे महाराज ! जेनाथी जीवना सर्वे दुःख नाश पामे एवा शुद्ध धर्मने आप प्रकाशित करों के जेथी ए दुष्ट मिथ्यात्व दूर जाय.

उत्तर-हे भद्र ! ए कहेवानो अवसरज हवे छे. कारण के सम-कित पाम्या शिवाय शुद्ध धर्मनी प्राप्ति थती नथी. तेथी जीव समिकन केम पामे छे? ते प्रथम कहुं छुं-मागीनुसारी जीवनी भव्यता पाकीने भीढ शक्तिवाळी थाय छे अने तेथी तेने अपूर्व करणना परिणामनी

आत्मभाव जाणवो. तेथी एने जीवादि तत्त्रीना स्वरूपनुं श्रवण कर-वाथी आत्मादिक पदार्थीना स्वरूपनी झळक भासमान थाय छे. एटले तेने कोइ उपदेशक पुरुप अथवा धर्मशास्त्र के जे, जीव पदार्थने अरिहंतीए उपदेशेला आगमनी रीते कथंचित् नित्य, कथंचित् अनित्य, कथंचित् शुभाशुभनो कत्ती, तेनो भोक्ता, अनादि उत्पाद व्यय धुवता युक्त, स्वभाव सिद्ध इत्यादिक रीते कहे ते संभवित हावायी रुचे; अने कोड् उपदेशक अथवा शास्त्र जीवने सर्वथा अतुत्पन्न, अविनष्ट, सदा स्थिर एक स्वभावे नित्य, अथवा सर्वथा क्षणस्थायि अनित्य, सर्वथा नास्ति, सर्वथा सामान्य, सर्वथा विशेष, सर्वन्यापि एक अथवा देहादिक ग्रुभाग्रुभनो अकत्ती, प्रकृतिकृतनो भागी, शरी-रना एक देशमां रहेलो इत्यादि रूपे कहे तो ते असंभवित होवाथी स्वभावेज न रुचे. तथा मार्गानुसारी पणामां जे देवगुरु पृजादि तद्धेतु अनुष्टान हता ते अमृतानुष्टान थड् जाय. अने लोकटृष्टिए कराता यमनियमादिक स्वरूपशुद्ध अनुष्टान ते एने परमार्थ द्वतिए कराता अनुर्वधशुद्ध अनुष्टान थायः

पछी उपशम समिकतरूप गुणथी मोटी स्थितिवाळी मिथ्या-त्वमोहनीयनी प्रकृति जे सत्तामां रहेली छे, जे उदय उदीरणामां आवी नथी, जेना सर्व दळीया दुष्ट रसथी भरेला छे, तेने उदयमां आव्या अगाउज परिणाम विशेपना प्रभावथी शोधी काढे. एटले तेनी त्रण प्रकारनी राशि करे. ते आ रीते—जेटला दळीयामांथी किष्ट रसनो उत्पादक दुष्ट रस सर्त्रथा नष्ट यइ जाय तेनो पहेलो

न्त्रहेवामां आव्युं छे के अग्रुद्ध पुंजना उदयथी जीव सादि सांत मिथ्यात्वी होयः

औपशामिक सम्यक्त्वनी स्थिति अंतर्गृहूर्त्तनीज होय छे, तेथी ते स्थिति पूर्ण धतां जो शुद्ध पुंजनो उदय थाय तो जीव " क्षयो-पश्चिक " सम्यग् दृष्टि थाय. ते स्थितिमां जो उत्कृष्ट पणे रहे तो अ-संख्याता काळ सुधी रहे. अने क्षयोपश्चम सम्यक्त्वमां वर्ततां कोइक जीव ए त्रणे पुंजोनो क्षय करी शुद्ध अपीद्गाळक "क्षायिक" समिकित पामी, क्षपक श्रेणीए आरोही, सकळ मोहनीय, अंतराय, ज्ञानावरण, दर्शना-चरण ए चार कर्मीनो क्षय करी, वीतराग सर्वज्ञ थाय. अने पछी योग निरोध करी समग्र कमें रहीत थइ तेज भवे मोक्षे जाय.

ए त्रणे प्रकारना सम्पग् दृष्टि जीवा वीतराग सर्वे अरिहंत देव विना अनेरा रागी द्वेपी छग्नस्थाने देव करीने मान्य करे नहीं, गुद्ध जिनागमना उपदेशक पंच महाव्रतथारी निरारंभी मुनिविना अनेरा गृहस्थ पार्श्वस्थादिकोने गुरु भावे मान्य करे नहीं, अने दयाविशाल, पद्काय जीवोनी हिंसानो निषेधक, स्याद्वादपणे सर्व वस्तुनो ज्ञापक अने वितराग सर्वे उपदेशेल-एवा धर्भ विना- आगवाक्त धर्म विना अन्य यज्ञ याजन, नदी सरोवर समुद्रादिकमां स्नान अने कन्या गो भूमिदानादिकने पुण्य हेनुपणे उपदेशक, मिथ्यादृष्टि छग्नस्थ-मणीत, एकांत नित्य के एकांत अनित्य वस्तुना ज्ञापक, एवा शास्त्रोक्त चर्मोने धर्मभावे मान्य करे नहीं. अरिहंतादिकथी अन्य देव गुरु

अनित्यने तो ते घंटे नहीं. तकी ने परिणाभी होय तेन सर्नया निणम्या विना ने सर्पथा उपज्या निना जेम द्य दिभिषण परिणमे हो तेम मृळ वस्तुन उत्तरीत्तर अन्यस्प परिणमे. एटले संसारी अगुद्ध भीतन शुद्ध स्वस्प ब्रह्मपे परिणमे, पण जो अपरिणामी होय तो तेम घंटे नहीं. आ ममाणे ते समजी शके अने तेथी एकांत नित्य ने अपरिणामी जीवादिकने माननारा दर्शनो बंधमोक्षना विरोधी हो एम जाणे. ते साथे एवा विरोधी अगुद्ध तत्त्यने कहेनाराना देव गुरु पण अगुद्धन होय एम समजी शके. तेन रीते मकृतिनेन वंव मोक्ष मानवावाळा एटले सर्वथा आनित्य मानवावाळाने पण वंधमोक्षनो विरोध आवे हो एम ते समजी शके अने स्याद्वादरूपे वस्तु कहेनार दर्शननेन शुद्ध मानी तेनो स्वीकार करे.

प्रश्न. २९-हे महाराज ! जे प्रमाणे अरिहंत, चीतराग सर्वेज्ञ थाय छे तेज प्रमाणे अन्य जीवो पण बीतराग सर्वेज्ञ थाय छे के कांड् न्युनपणे थाय छे ?

उत्तर-हे भन्य ! वीतराग सर्वेज्ञ सर्वे तुरुपज थाय छे.

प्रश्न. ४०—हे महाराज ! जो सर्व तुल्य थाय छे तो पछी अरि-हंतोने देव पानवा, तेपनी प्रतिमाओ कराववी, पुष्प अर्छकारादिके चहुमानपूर्वक तेपनी पूजा करवी अने अन्य बीतराग सर्वज्ञोने देव-पणे न मानवा, तेपनी प्रतिमाओ न करवी इत्यादि लोकरुढी चाछी। आवे छे के तेमां कांइ हेतु छे ?



शन कार्य धार्य छै. वळी ते भात्री अरिहंतोनी तथाभन्यता परिपन्ध थाय छे त्यारे तेमनी सम्पक्तं प्राप्ति पण नियमा स्वल्प काळमां-सं-रुयाता भवमां सिद्धिदायिनी, भगवर भावने निष्पन्न करती अने अन्य भव्योनी सम्पत्रत्व प्राप्तिथी विलक्षणतावाळी होय हे. तेमने तस्त्र-हान समजावतां उपदेशक गुरुने परिश्रम करवो पडतो नधी सहज कथन मात्रथी यथार्थ भास तेमना हृदयमां प्रष्टत्त थाय छे. तेवा सुकर वेषि स्वभाव गुणवडे ते मथम भवधीज स्वयं संबुद्ध होय छे. त्यां-थीज तेमने एवी भावना मवर्त्त थाय छे क-"अहो । आवो जैन धर्मनी मकाश छतां आ संसारी जीवा घोर महांधकारमां भूछा भमे छे ते महा आश्चर्य छे ! तेथी हुं मवळ उद्यम करीने ए मोहांधकारमांथी ते सर्वने काढी शुद्ध मोक्ष पंथे चडावुं अने परम सुखीया करुं," आवी भावना तेमने सदाय वर्ते छे ने तेम करवाने तेओ प्रष्टत थाय छे. वळी ते ज्यां सुधी संसारमां रहे त्यां सुधी महा कम्णाना समुद्र, के तज्ञ शिरोमणि, विनय प्रधान, अति औदार्य धेर्य गांभिर्य शौर्यवान, भारणागतवत्सळ, न्यायमार्गगामी, देवगुरुना भक्त, परम परोपकारी, मार्थनामंगभीरु अने जगज्जनवंद्य होय छे. तथा तीर्थंकर थवाना भवथी पहेलांना त्रीजा भवने पामे त्यारे ते भवमां जिनागम प्रसिद्ध भीश स्थानकोना आराधननी तप अवस्य करे छे, तेथी तीर्थकर नाम गीत्र उपार्जन करी, स्वर्ग छोकमां महद्धिक देवता थाय छे. त्यांथी र्च्यवी ज्यारे मनुष्यलावामां राजकुळमां जननीनी कुक्षिमां चरम अवंतारे अवतरें छे त्यारे ते रात्रिए जननी चीद महा स्वम देखे छे।



पण पाछा इंद्रादिक आत्री अभिषेक अने दीक्षामहोत्सव करे छे, मसु दीक्षा अंगीकार करीने तप संयमवडे ज्ञानावरणादि चार घातिक-मीनो क्षय करी केवल ज्ञान दर्शन उपनावी नीतराग सर्वज्ञ थाय छे, ते वखते इंद्रादिक आवी समवसरण रचे छे, प्रभु रत्न सिंहासने बी-राजी त्रिभुवननी पर्पदामां यथार्थ वस्त्रधर्ममय देशना आपे छे. ते देशना एक योजन पृथ्वीमां सर्व जीवोने स्वस्व भाषापणे परिणमे छे, असंख्य जीवोए सर्वकाळे पृछेला जुदा जुदा प्रश्नानो उत्तर प्रभुजी तेमना मनंतुं समाधान थाय तेवो एक वचने आपे छे. पछी धर्मदेशना देता सता महिमंडळमां विचरे छे, अष्ट महा प्रातिहार्य अने चेत्रिश अतिशयवडे अळंकृत थाय छे, मार्गमां रक्षो नमे छे, पक्षीओ पदिस-णा दे छे, कांटा अधीमुख थइ जाय छे, छए ऋतु सर्वकाळे सुख आपे तेवी वर्ते छे, इत्यादि अनंत महिमावाळा तीर्थकरो थाय छे; सामान्य केवळीओने आ कहेल मभाव होतो नथी. तेओ केवळज्ञान दर्शनवंता होय छे. आ प्रमाणे अरिहंत देव परमार्थे परम उपकारी होवाथी मुख्यताए ''देव" कहेवाय छे. तेमनी जे कोइ अज्ञानी जीव आशातना अनादर अवज्ञादिक करे छे ते अनंतकाळ पर्यंत दुर्गतिमां रझळे छे, अने तेगनी भक्ति करनारा जीवो सर्व पकारनी सुख संपदा पामे छे.

पश्च. ४१-हे महाराज ! जेवी रीते अरिहंती अहीं महा प्रभाव-वाळा होवाथी अने अनंत महिमावाळा होवाथी सर्व केवळीओ करतां श्रेष्ठ छे तेम मोक्षमां पण सर्व सिद्धो करतां तेमनी सिद्धता श्रेष्टतावाळी होय छे के नंहीं ?



ग्रुरु शब्दनो अर्थ शास्त्रमां एम क्यों छे के-' धर्म-वस्तुतत्वना जाण, धर्मनाज करनार, धर्ममां सदा रहेनार अने धर्मनाज उपदेशक जे होय तेने ग्रुरु कहीए. ' ए कहेला गुरुना लक्षण गृहस्थमां होय नहीं तेथी तेनामां गुरुभावनी योग्यता नथी एम अमे कहां छे.

पक्ष. ४४-रजोहरणादि मुनिना चिन्ह धारण न करवाथी गृह-स्थमां गुरुपणुं नथी के कोइ ज्ञानादिकना अभावना कारणथी नथी ?

उत्तर-हे भद्र ! वेपनो अभाव तो सर्व मतुष्यो देखी शके छे तेमां विशेष नथी, पण धर्म-बस्तुतत्वना जाण ए प्रथम कहेछुं गुरुतुं छक्षण तेनामां होतुं नथी तेथी तेनामां गुरुपणुं नथी.

मश्च. ४५--ग्रहस्थो पण महा पंडित होय छ तो तेओ धर्म-तत्वना जाण केम न होय ? तेमनामां ए लक्षणनो अभाव घटी शकतो नथी।

उत्तर—हे भद्र ! पुत्रोने जणवानी पीडाथी पीडाती अने रुदन क-रती अनेक स्त्रीओनी पासे वेसवाथी जो बंध्या स्त्रीन तेनी पीडानो अनुभव थाय तो काव्य, व्याकरण, न्याय, तर्क, छंद, अलंकार, कर्म-प्रंय पर्यंत मकरणो विगेरे घणा शास्त्रोना जाण अने घणा आगमोना सांभळनार गृहस्थ महा पंडितने आगमना अभ्यासी निरारंभी मुनिनी नेवो धर्म वन्तुनो अनुभव जागे. परंतु तेम थतुं नथी तेथी गृहस्थ महा पंडितोने पण निरारंभी मुनिनी जेवो धर्म वस्तुनो अनुभव जागवो अमंभवित छे. तेथी अमे ने छक्षणनो अभाव कहा। छे.

मक्ष. ४६-हे महाराज ! यहस्थने मुनिनी जेवो धर्मना स्वरूपनी भाम नहीं जागवानुं कारण हां ?

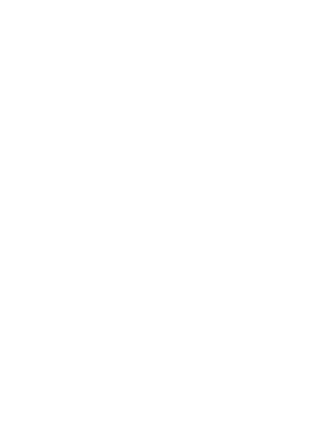
जा हेनुओ छे ते आ प्रमाणे-जेम साधु, मात्र धर्मकार्यनाज करनारा होय छे तेम गृहस्य मात्र धर्मकार्यनाज करनारा होता नथी; तेओ छकायना आरंभ, विषय भोग, पुत्र पुत्रादिकना विवाह विगेरे सांसा-रिक कार्यना पण करनारा होय छे, तेथी सदा धर्मकर्चा एवं गुरुनं वीं छें छक्षण कर्तुं छे तेना पण तेनामां अभाव छे. वळी साधु, मात्र धमोंपदेशना करनारा छे तेम गृहस्थ, मात्र धमोंपदेशना करनारा नथी; नेओं तो सांसारिक उपदेश पण करे छे. जेमके तारे पुत्र नथी माटे वीजी की परण, तारी पुत्री मोटी थड़ हो तेना लग्न कर, दाणानी, घीनो, तेलनो अथवा कपास विगरेनो बनार तेन शतानो छे तेथी वेर्न रार्गरी कर उत्पादि अनेक आईभना पण केंद्रनारा होय छे तेथी परितरेगा मप गुरना पीना लक्षणनी पण तेनामां अभाप छे. तथा हैंदर रार मिथिरिया अर्थ यापास्यांच रहे हे तेम सहस्थ सामिरियम र्व १५८६ की समाति तेथी स्मिता देवपुनादि परिनारीमां के 🚰 🧖 ३६६ र स्थात नोजन कामनिळास व्यापार रोजगामादि पाप-र्के १५७ पर्से। ५ तता पर्षेषां स्थितिरूप मुख्ता चाया *ख*राणनी \* 🕝 💛 🧰 🖽 🤃 જરંક 'પોતંત્રા પોતાની તે, તેમોળંદણ પશ્ચિમ ું 🐩 🥴 🤭 છે છે. તેમાર શેરાશિ છુલન ગુરુ થઇ ન શકે. १८ ४ -रे ५ % इस रे सा । यम आहारादिक नी बीर है. ्र १ ८०% हें। सहस्र पत्र विश्वान आजा की देखाँह र १ के कि अभिज्ञान के माने के बारिस माने के बार्ग स्थाप र्गा १८८८ । १८८८ वर्षे देशे स्वासंस्थानम् पर्या पश्चित्रकारी नहीं



पिंडिसेवीने मूळ गुण ने उत्तर गुण वंनेमां घणा अतिचार होय; एक-वीश संवळ दोपथी तेनुं चारित्र चित्र कावरुं होय पण अनाचार वंने-ने न होय. शरीरनी शोभा विभूषा मुनिषणामां थइ शके तेवी इस्त-पाद मुख पक्षाळनादि रूप करे, वाह्य व्यवहारथी पार्श्वस्थादिक जेवा देखाय पण पार्श्वस्थादिक व्रतमां निरपेक्ष निध्वंस परिणामी होय न आ व्रतमां सापेक्ष मृदु परिणामी होय. तेथी आ काळे पण साधु छे अने तेमना कृत्य तेमना नियंटानी हदमां होवाथी धर्ममय छे.

मश्न. ५१-हे महाराज ! आपे-' उपरथी पासथ्या जेवा देखाता छतां ते जतमां सापेक्ष होय ' एम कहां ते शी रीते समजतुं ?

उत्तर-ए साधु संज्वळना क्रोध मान माया लोभना उदयथी तथा तेनाथी उत्पन्न थयेला रागद्वेपथी, तथा वेद अने हास्यरितना उदयथी अनाचार स्नान शोभा शृंगार काम भोगादि करवा इच्छे, ते करवा मवर्चे, विकारी थाय, पण बुक्कस अथवा कुशीलपिडसेवी नियंदाना सद्भाव रूप गुणथी वतोनी, दीक्षानी, शावननी अने वी-जा साधुओथी लजावानी अपेक्षा आववाथी अनाचारादि करता अटके, पाछा निवर्चे. मनमां विचारे के-" अरे जीव! तें पंचमहाव्रत उच्यो छे, दीक्षा लीधी छे मांटे अकार्य न कर. जो तुं अकार्य करशे के दीक्षा पडी मुकशे तो जिनशासनना विरोधीओ शासननी हीलना निदादिक करशे नेमज साधुओं तने गंडळी बहार गणशे, गुरु वेप उनारी लेशे. "आम विचारीने अकार्य करें नहीं. तेथी तेने वतसा-पेक्ष करीण. कदापि कोइ महामोहना उदयथी अकार्य करी नार्से तो



छतां गुरुभावे वांदी नहीं. तेमज चारुदत्ते वकराने अंत समये शुद्ध धर्म पमाडचा, तेथी ते नंदीशर नामे देव थयो, ते देवे आवी चारुदत्तने धर्माचार्य जाणी गुरुभावे वांद्या पण पासे वेठेळा विद्याधर मुनिना पुत्रोए तेने गुरुभावे न वांद्या. आ प्रकारे होवाथी जिनवाणीना स्था-द्वादपणामां वांधो आवतो नथी.

पश्च. ५४—हे महाराज! गुरुनी सेवा भक्ति करवाथी तो गुरु प्रसन्न थाय छे अने तेथी सेवा करनारा तेमना सदुपदेश अवणनो तेमना शास्त्रना अभ्यासनो लाभ पामे छे. एटले गुरु सेवानुं फळ तो सेवकने मत्यक्ष देखाय छे तेथी ते तो करवा गुक्त छे; परंतु देवो तो वीतराग सिद्ध निरंजन छे, ते सेवा भक्ति करवाथी सेवक उपर भसन्न थता नथी, तेम न करवाथी अभसन्न थता नथी, त्यारे तेमनी सेवा भिक्ति करवाथी ने न करवाथी सेवक जनोने कांइ लाभ हानि देखाती नथी माटे अरिहंत सिद्ध मारा देव छे एम मानवुं तो जरुरनुं छे कारण के तेथी सम्यक्दिष्टपणुं निर्मळ थाय छे परंतु तेमनी सेवा भिक्ति विशेषे करवानी तो जरुर जणाती नथी। तेओ तेने इच्छता पण नथी तो ते शा माटे करवी जोइए ?

उत्तर-हे भन्य ! गुरु सेवातुं दृष्टांत आपीने तमे कहां के-'देव वीतराग होवाथी ते सेवा भक्ति करवाथी प्रसन्न थता नथी अने न करवाथी अपसन्न थता नथी ' ते तो वरावर छे पण 'सेवा भक्ति करवाथी ने न करवाथी सेवक जनोने कांइ लाभ हानि देखाती नथी' ए कहें बुं असत्य छे. करवाथी लाभ छे, ने न करवाथी हानि छे. ते-



या लायक, मानवा लायक, नमवा लायक अने ध्याववा लायक छे, अने तेमनो सर्वे उपदेश आत्महितेच्छ जीवोए। आदरवा लागक छे. ए सर्वज्ञ परमात्माए सर्व जीवोने हितकारी उपदेशन करेली छे तेथी ए प्रभ्र सर्वने परम उपकारी छे. " आती वृद्धि तेवा देवने आश्रया-विना निराहंबीने उपजी। नथीं. पूज्यने निषे पूज्यनुद्धि पूज्यना आर्टवनथीज उत्पन्न थाय छे. अने एवी धर्मविचारणावाळी बुद्धिज धर्मतुं मूळ छे. वळी तेवी तुद्धि वीतराग देवना अवलंबनथी उपनेळी होवाने **र्छा**घे ते बुद्धिना मूळ कारण देव होवाथी देवभक्तिज सर्व र्धमनुं मूळ छे एम अमे क्लुं छे. वळी देवना अवलंबनथी एवी धर्म-युद्धि पामीने भव्य जीवने ते धर्मग्राद्धिनी प्रेरणाथी देवउपर पारमा-र्थिक भक्तिराग मगटे, अने तेवा भक्तिरागधी ते देवना गुणोनी स्तवना करवामां, तेमनी पूजा फरवामां, तेमने नमवामां, तेमना स्म-रणमां, तेमना नामना जाप करवामां, तेमनं ध्यान धरवामां उद्यमवंत थायः तेमज देवपंदिर कराववामां, जिनविंव भराववामां, तेमना प्रति-ष्टा महोत्सव करवामां, तेमनी पुष्पहार केशरचंदनादिवडे विशेष भक्ति करवामां अने विविध अलंकारादिवडे तेमने शृंगारवामां पोताना द्रव्य-नी सफळता समजे. वळी गुरुमुखे विधिपूर्वक जिनागम भणवामां अने श्रवण करवामां पोतानी जींदगीनी सफळता माने, तेमन शक्ति प्रमाणे देशविरति के सर्वेविरिंग धर्म आदरवामां, विधिशुद्ध तप संयम पाळवामां उद्यमवंत थाय. आ वधुं पारकी मेरणाविना देवभक्तिना **पेम रसयी भरेली धर्मद्राद्धिना उ**र्द्धासितपणायी थाय. एवो जिनभक्तिनो



## भी भनाचिरपांधी उद्धित

## लक्ष्मी सरस्वति संवाद.

एकदा लक्ष्मी अने सरस्तती नन्ने निराद थयो, तेमां सरस्तती घोली के "जगत्मां हुं ज मोटी हुं, कारणके में अंगीकार करेला मनुष्यो सर्वन्न सन्मान पामे हो, अने तेओ सर्व पुरुपार्थना जपायोने पण जाणे हो, कहुं हो के—"स्वदेश पूज्यते राजा, विद्वान सर्वन्न पुज्यते "राजा पोताना देशमां ज पृजाय हो, पण विद्वान तो सर्वन्न पुज्यते "राजा पोताना देशमां ज पृजाय हो, पण विद्वान तो सर्वन्न पुजाय हो, बळी हे लक्ष्मी ! हुं के जे नाणास्त्रेप रहेली हो, तेना मस्तक-पर पण हुं रहेली होंडं, तो ज लेवा देवा विगेरे व्यापारमां तारो व्यवहार थइ शके हो, अन्यया तने कोइ ग्रहण करे नहीं. माटे हुं ज मोटी हुं, "ते सांभळीने लक्ष्मी वोली के—" हे सरस्वती ! तें जे आ कहुं, ते तो मात्र करेवारूपे ज हो, ताराथी कोइनी सिद्धि थती नथी। कारणके तें अंगीकार करेला पुरुपो मारे माटे थइने संकदो अने हजारो देशीमां परिश्लमण करे हो, अने मारा अंगीकृत पुरुपो पासे आवी सेवकनी जेम तेमनी आगळ एमा रहे हो कहुं हो के—

वयोच्छास्तपे।च्छा, ये च च्छा बहुश्रुताः। ते सर्वे धनवृद्धानां, दारे तिष्ठन्ति किंकराः॥श।



नेपी हे मनस्वरी ! ताम जंगीसार का ना नुरुत्ती भागा अंगी-कत करेक प्राचेता भेरत समात है. गारा चेंगीका करेवा प्राची दीने पा गाह र न भाष है। मोर नगत्मां है न मोरी हुँ। नहीं 🕏 संस्थिती ! मात्र लैन्सिनेभी जिताय यीजा जे प्रयो तार्र रीवन करे हो, तेथा सर्वे पांच मारे माटे च केपके '' भारानी जयास क्सी विद्यान थर्ने हं लक्ष्मीनुं उपार्नन करीय " एवं नेपन् साध्य रोयके. नेपां पण भा जगामां माये चालको ज तने अनुसरे छ, नेओ पण चन्साह रहित मात्र मातिपिताना के अन्यापक्रना भगशी ज तारुं सेवन करे हे, परंतु भीतिपूरिक तने अनुसरता नधी. बीजा केटलाक रुद्ध पुरुषो तने अनुसरे हो, तेओ पण छज्जाथी के उदरभरणना भयथी ष्यया मारा अंगीहन पुरुषाने मसन्न करवाना हेत्थी ग्रप्त रीते अभ्यास करे छे, केमके लोको पण तेमनी हांसी करे छे के-" अहो! आडली मोटी उंगरे हवे भणवा वेठा छे, हवे पाके घडे कांठा चडवाना छे ? " इत्यादि कहीने कोको तेनुं उपहास करे छे. अने मारे माटे तो सर्वे संसारी जीवो अनादि काळथी सर्व अवस्थामां मने अनुकूळ ज छे. नानां वाळको पण मारुं नाणादिक स्वरूप जोइने तरत ज उल्लास पामे छे, इसे छे, अने मने ग्रहण करवा माटे हाथ लांवी करे छे, तो पछी जेओ अधिक अधिक उम्मरना होय छे, तेओ मने जोइने उछास पामे तेमां शुं आश्वर्य ! रुद्ध लोको पण मने उपार्जन करवा माटे यत्न करे तेमा कोइ पण तेनुं हास्य करता नथी, पण उलटी तेनी प्रशंसा करे छे के-" अहा ! आ पुरुष दृद्ध थया छतां पण स्वडपार्जित धनथी ज



आठ पगचां तेनी सन्तरम आभी तेन सालांग प्रणाप कर्षा, अने तेने बहुमानपूर्वक बीचा भद्राजनपर नेतारी पीते पेताना भद्रासनपर वेटो. वेना गुणथी रंगित थपेला धनिके तेने पार्त के-'' हे. भट्नी ! आप कया देशना रहीश हो ि अहीं आपने पत्रास्तं बा कारणे. अयुं छे १ कया पुण्पशाळीने पेर भाषनी उनारो हो १ अने आपर्व नाम जुं छे ? " आ प्रवाणे ते धनिकना पूछतायी ते बाताण वाल्यो के-" हे गो ब्राम्मण मतिपाळक बेठ ! हं काशीदेशमां वाराणसी नामनी पीत महा-पूरीमां रहुं हुं हुं ब्राह्मणना पदक्षीमां तत्पर हुं,रामग्रवासी भणेली हुं,धर्भ-नी रुचिवाळाने पुराणादिकनी कथा श्रवण कराववा वडे मारी दृति (आ-जीविका ) छे, अनेक ब्राप्तणोने हुं वेदादिक शास्त्रोतुं अध्ययन कराबुं छुं, ते नगरीनो राजा पण भक्तिपूर्वक मारी सेवा करे छे. ते राजाए मने गृहस्थाश्रमना निर्वाह माटे सो गाम आपेळां छे, तेथी हुं सुखे वसुं छुं. हे शेट! एकदा शास्त्र वांचतां तेमां यात्रानो अधिकार आव्यो तेमां में वांच्युं के-' मतुष्य जन्म पामीने जेले यात्रा करी नथी, तेनो जन्म अंतर्गहुना जेवो निष्फळ छे. ' आ प्रमाणे यात्रातं माहात्म्य जाणीने मने तीथीटन करवानी इच्छा थड़; तेथी हुं घर आगळ पालखी, मीयाना, विगेरे वाहनीनी सामग्री छतां पण तीर्थयात्रा पगे चालीने करवाथी मोटा फळने देनारी थाय छे तेथी ते सर्व छो-डीने एकलो ज तीर्थयात्रा माटे नीकळ्यो छुं. अने फरतां फरतां गइ काले ज अहीं आन्या हुं. एक शास्ताभ्यासनी शाळामां मारो उतारी छे. त्यां रात्रीतुं निर्गमन करी पातःकाळे स्नानादिक पट्कमे करी



जेप संगीतथी संवाहने दोदना दोचना लां आपना लाग्या, अने तेओ पण चित्रती जेम नियळ शहेन एक चित्रे शत्रण करता छाग्या-तेपम जेओ भाराना ज्ञानमां कुमक पंजितो हता, नेओ पोतपोतानी विद्वाना गर्ववाळा हता, जेओ अत्यंत सस्त अभ्यामयी समग्र गा-सना परमार्थने कंट राखनारा हता. तथा जेओ वातृत्व अने कतित्वः ना शास्त्र भणीने तेनुं फळ पामवाशी मदोन्मत्त थउने फरता हता, तेओ पण त्यां आवीने श्रवण करवा लाग्या. ते मायावी ज्ञातमणनी नवनवा उल्लेखयी शोभती तुद्धिनी पट्टनाथी शब्दभेद, पदच्छेद अने श्रंपार्थ विगेरे विचित्र मकारना अहंकारथी गार्भित अने सर्वतोमुख ( विषय ) वाळी वाणीनी क्रशळता जोइने ते सर्वे पंडितो पेातपेातानी निपुणतानो गर्व तजी दइ ते ब्राध्मणनी अने तेनी वाणीनी प्रशंसा करवा छाग्या-" अहो ! हां आ ते ब्राह्मण छे ? के रुपांतरे आवेली ब्रह्मानी मूर्ति छे ? आ ते साक्षात् कामदेवनी मूर्ति छे के दाढी मूछ-वाळी साक्षात् सरस्वती देवी छे ? अथवा ह्युं आ सर्व रसोनी मत्यक्ष मृत्तिं छे ? आनी वाणी शुं आदिब्रह्मनी ध्वान छे ? के शृंगारादिक अमृत रसनी नदी छे ? अहो ! आतुं चमत्कार उपजाववामां कुशळपणुं अने बुद्धिनुं पटुपणुं ? अहो ! आनी सार्थक अने विविध प्रकारना अ-र्थनी योजना करवानी शक्ति ? अहो ! आनी शब्दना अनुपासनी चतुराइ ? अहो ! आनी एकज पद्य ( कविता ) मां दरेक पादे नवा-नवा राग उतारवानी शक्ति ? अहो ! आनी अत्यंत कठण अने गंभीर अर्थने श्रोताना हृदयमां सहेलाइए उतारवानी (समजाववानी )



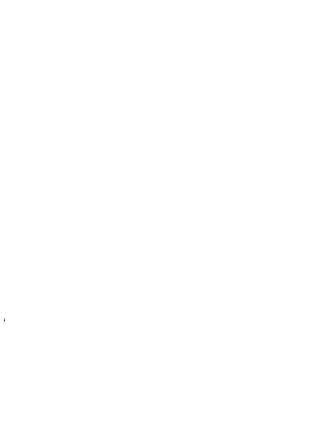
णीनां टीपां पडतां इतां, मुखमां एक पण दांत इतो नहीं, अने तेथी तेमांथी छाळ पहती हती, दृद्धावस्थाने लीधे मस्तकपरना केश खरी पडवाथी टाळ पडेली हती, शरीरनी चामडीपर जरा पण तेज हतुं नहीं, वचन वोलतां पण स्खलना थती हती, नेत्रथी वरावर जोइ शकातुं नहोतुं, मिलन श्वेत वस्त्र धारण करेलुं हतुं, शरीरनो भाग कटीपदे-शयी नीचे नमी गयेलो इतो, तथी हाथमां लाकडीनो टेको राख्यो हतो, चाळतां पग थरथरता हता, तेथी ते लथडीया खाती खाती मुक्केलीथी चालती हती. आवा पकारतुं स्वकृप धारण करीने ते नग-रमां आबी. नगरमां भमती भमती तेज शेठना महेलना पाछला द्वार पासे आवीने दीन वाणीवडे जळनी याचना करवा ळागी. ते द्वार अर्धु उघाडुं हतुं, त्यां ते शेठनी पत्नी तथा तेनी पुत्रवधु वेटी वेटी पेटा ब्राह्मणनी मधुर वाणी रसिकताथी सांभळती हती. तेणीना कर्णमां आ दृद्धातुं वचन उकाळेला सीसा जेवुं लाग्बुं, अने अवणमां रसनो भंग थवा लाग्यो, तेथी सामुए क्रोधथी वहने कहां के-" हे वत्से ! जो, जो, पाछळने द्वारे कोण पोकार कर छे ? कोइक कटोर शन्द बोलेछे, तेथी आ मछुर वाणी सांभळवामां विन्न थाय छे, माटे ते जे कांड़ मागे ते आपीने तेने अहींथी काढी मुक, के जेथी छुखे सांभळी शकाय. आर्चुं सुंदर श्रवण करवानुं आज कोइ महापुण्यना उदयथी माप्त थयुं छे. फरीथी आवं मळशे नहीं. आ क्षण छन्न महोरोथी पण वधारे मोंबो छे, एक घडी पण जन्म अने आसा जीवतरने सफळ करनारी छे, माटे जलदी जड़ने तेने रजा आपी पाछी आव.



दासी केम थाओं हो ? तमार्क कोइ समुं नहार्ट्ड नथी ? " डीकी चोली के-'' हे कुलवनी ! मारे पढेलां तो भणा कृटुंबीओ हता, ते सर्वे मरी गया हे. शुं करतुं ? कर्पनी गति अनिर्वाच्य हे ! कोण जाणे छे के शुं थयुं अने शुं थशे ? हमणां तो हुं एकछी ज छुं, आ-यां पात्री तो मारे घणां छे, पण मारी चाकरी करे तेत्रुं कोड नथी। जे कोड मारी सेवा करे, अने मारी जींदगी पर्यंत मारी अनुकुळताए वर्ते, तेने हुं मार्न सर्वस्व आपी दर्ज, मारे राग्वीने शुं करवुं छे ? लक्ष्मी कोइनी साथे गई नथी, जनी नथी अने जशे पण नहीं, " एम कड़ीने डोशीए झोळी उमाठीने ते बहुने बताबी, बहु झोळीनी अंदर जीवा लागी, तो तेवां अनेक रत्नवय पात्री, अनेक रत्नना आभूपणी तथा अनेक मोतीना अलंकारी जीया. ते दरेक करोड करोडना मृत्य-बाळां हतां, अने पृथ्वीने विषे अलभ्य हतां, तेणीए कीइ पग बखत नजेर पण जोयां नहे।तां तेवां ते इतां, तथा तेमां स्त्री अने पुरुषने पहेरचा योग्य उंचां किंमती वस्त्रो अने वीजा पदार्थी पण इतां. ते वह तो आ सर्व वस्न आभरण विगेरे जोइनेज कथा सांभळवातुं तो भूली ज गइ, अने तेणीना चित्तमां लोभ पेटो. लोभयी रांनित थयेली ते वह बोली के-" हे डोशी मा! शा माटे तमे दुःखी थाओ छो? तमारी सेवा हुं करीश, तमे तो मारी माता समान छो, अने हुं तमा-री पुत्री छूं. हूं मन, बचन कायाथी तमारी जीवन पर्यत शुद्ध सेवा करीश. तेमां तमारे कांड पण शंका राखबी नहीं, अने कांड पण भेद ( जुदार ) राखवो नहीं. घरमां आवो, अने आ भद्रासनपर सुखेथी



श्रवणमां विद्र करे छे ? विधाताए तने मनुष्यने रूपे परा सरजी दे-खाय छे. आवा दुर्छभ मनुष्य भवने सफल करतां अपने तुं वृप पाडीने विब्र करे छे, तेथी तेना पापवडे तुं मरीने गरेडी थइग." त्यारे बहु चोली के-" हे पूज्य ! एक द्रद्ध माता तमारा अगण्य पुण्यसमूहना जदयवडे ओचिता अने अणवोलाच्या लक्ष्मीनी जैम आच्या छै."ते सां-भळीने ते सासए क्रोध अने अहंकार सहित जवार आप्यो के-" हे जडयुद्धिवाळी ! आ गाममां आपणाथी कोइ मोट्टं छे ? के जेने तुं सरसवने मेरुनी उपमा आपी वर्णवे छे ? माटे में तने जाणी के तं महाँ मूर्ख छे. तुं आवडी मोटी उम्मरनी थइ छे, तो पण वखत वे वखनने हजु जाणती नथी. कदाच कोइ मोर्ड माणस अयोग्य अव सरे आपणे घर आब्युं होय, तो तेने योग्य सन्मान अने शिष्टाचार करीने विदाय करी पोताना कार्यमां साववान थाय तेज डाह्या कहेवाय, पण तारा जेवा डाह्या कहेवाय नहीं. " आ प्रमाणे सासुने वचन सांभळीने वह बोली के-"आपे कहां ते वरावर छे, परंतु एक-वार अहीं आवीने मार्छ एक वचन सांभळीने पछी खुशीथी जाओ. शामाटे नकामा लोकोने संभळावो छो ?" ते सांभळीने सासु भक्कटी चडावीने नेत्रने वांका करती आवी, अने वोली-' छे, आ आवी, शुं कहे छे ? ' त्थारे ते बहुए पोतानी कक्षामां लूगडानी अंदर राखेळुं रत्न जडीत सुवर्णतुं पात्र देखाडचुं. ते जीतांज सू-र्येनो उदय थतां कमळनी जेम सासुन्नं मुख विकस्वर थयुं• हास्य अने विस्मयसाहित तेणीए वहुने पूछ्युं के-'हे पुत्री !



ज गणत्री. अमारा मोटा भाग्यनो उदय थयो के जेथी तमे तीर्थस्वरूप अमारे घेर पत्रायी. आ मारी चारे वहुओ तमारी दासी प्रमाणे छे, ते तमारी आज्ञा प्रमाणे वर्तशे. खान, पान, स्नान, शय्या पाथरवी, उपाडवी विगेरे जे कामकाज होय ते तमारे निःशंकरीते अमने कहेत्रं, ते सर्व काम अमो सर्वे हर्पभेर शिरसाटे कर्ड्युं. " ते सांभ-ळीने रुद्धा बोली के-" हे भद्रे ! तुं कहे छे ते घणुं ठीक छे, परंतु तारो पति आवीने वहुमानपूर्वक आदरथी मने राखे, तो हुं स्थिर चित्ते रहुं, केमके चित्तनी प्रसन्नता विना कोइने घेर रहेवुं ठीक नहीं." ते सांभळीने शेटाणी वोछी के—'' एटटाथीज जो तमारा मननी प्रसन्नता थती होय, तो ते अति सुखे थइ शके तेवं छे मारा स्वामी आवा कार्यमां अत्यंत हर्पवान् अने उत्साहवान् छे, अने पोते अंगी-कार करेळानो पसन्न चित्ते निर्वाह करे छे. " त्यारे ते दृद्धा वीळी-''जो एम हेाय तो पण तेनी अनुज्ञा विना माराथी अहीं रही शकाशे नहीं. '' शेठाणीए कहां-''त्यारे हमणांज तेमने वालावीने अनुज्ञा अपावं. " रुद्धाए पूछयुं-'ते क्यां गया छे 27 शेटाणीए जवाब आप्या-'' कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे, तेनी पासे धर्मनुं श्रवण करे छे, पण तेने इमणां ज बोलाबं छूं. " युद्धाए कहां-" जो एम होय, तो तेने धर्मश्रवणमां अंतराय न करवो. " शेटाणी वोली-" अरे ! एवा तो पोताना उदर-निर्वाहने माटे घणाए आवे, तेथी शुं घरतुं कार्य वगडवा देवुं ? " एम कहीने ते शेठाणी दे। हती दोहती जे भागनी अंदर रहीने वहुओ सांभळती इती त्यां जड़ने तेना चारण।मां उभी रही पोताना एक से॰



चृद्ध माता आवी छे." शेठे कहुं-' कोण ! तारी मा आवी छे ?' एम चोलतां वोलतां शेठ घरमां गया. एटले शेटाणीए पेढुं पात्र देखाडचूं. ते जोतांज चकपकना पापाणपर छोढानुं आकर्पण थाय तेम आकर्षण थवाथी पूर्वेतुं सर्वे अध्यवसित शेठ भूछी गया, अने वोल्या के-' कीइ पण वखत नहीं जोयेदुं आ पात्र क्यांथी ?' ते वोली—''हे स्वामी ! हमणां आपणे व्याख्यान सांभळता इता, त्यारे एक कोइ परदेशी डोशी आवी, तेणे आपणा आंगणामां उभा रहीने पाणी मार्युं, त्यारे में मोटी बहुने आज्ञा करी के-जा, जो, कोण आउं कटक चचन वोछीने धर्मश्रव-णमां अंतराय करे छे ? तेने जे जोइए ते आपीने तेने रजा दइ आव." इत्यादि सर्व वृत्तांत स्वामीने निवेदन करीने तेणीए कहां के-" हे स्वामी ! तमारा भाग्यना वशथी आ दृद्धा जंगम निधाननी जेम आ-विली छे. कोइ पण तेने ओळखतुं नथी, कोइ तेने जाणतुं नथी, प्रथ-मज तमारे घेर आबी छे. तेणीनी पासे आवां पात्रो, वस्त्रो अने आ-भूपणो घणां छे, माटे तेणीने वश करीने आपणे त्यां राखो. " ते वात सांभळीने लोभथी विह्नळ थयेको शेठ शेठाणीसहित ते हदा पासे गयो. तेणीने प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के-" हे माता ! तमे कया देशथी पधारो छो ? तमे क्वशळ छो ? शुं तमारो कोइ परिचारक नधी ? " त्यारे ते दृद्धा वोळी के-" हे भाइ ! पहेलां तो मारे आई ज घर, धन अंने स्वजन विगेरे एटछुं वधुं हतुं के तेटछुं राजाने पण न होय, परंतु हमणां तो केवळ एकछी ज छुं. सर्व संसारी जीवोना कर्मनी गति विचित्र छे. क्यूं छे के-



बाह्मणने रूपे भारततुं व्याक्यान करे छे अने पूर्वे कहेला सर्व लोको श्रवण करे छे; ते ज रस्ते थइने केटलाक रामसेवको अने बीमा केटलाक नगरना गरीव भिक्षको विविध मकारना वसो तथा आभूर पणो हाथमां राखीने दोडता दोडता नीकळ्या. ते जोइने कथाना श्रव-णमां तल्लीन थयेला लोकोए तेमने पृत्रपुं के-'' आ सुवर्ण तथा रुपाना अलंकारो अने बस्तो क्यांथी लाव्या ? तथा शीव्रगतिथी केप दोडचा जाओ छो ? " एटले तेओ बोल्पा के-" अमुक कोटचापि-पति शेंट राजानो कांइक मोटो अपराध कर्यो हशे, तेथी अत्यंत कोप पामेला राजाए सभा समझ हकम कर्यो छे के-" सर्वे राजसेवको तथा नगरना लोको स्वेच्छाथी आ गुन्हेगारनुं घर छुंटी हपो, तेमांथी जे माणस जे जे वस्तु छड़ जरो ते ते वस्तु तेनी थग्ने, तेमां अमारा तरफथी कोइ पण प्रकारना भयनी शंका राखवी नहीं। हुकम थवाथी सर्वे लोको तेतुं घर छुंटवा लाग्या छे, लोकीए घणुं हुंटचुं तो पण हजु घणुं छे, तमे केम जता नथी? जाओ, जाओ, त्यां जइने खुशी पडे ते चीज ग्रहण करो. कोइ पण अटकायत करतुं नथी. आवो अवसर फरी फरीने क्यांथी मळशे ? अहीं वेसीने वार्ता सां-भळवाथी शुं हाथमां आवशे ? " आ ममाणे तेओए उत्साहित कर्या एटले तेमां ने लोभीजनो इता ते सांभळवानुं छोडी एकदम दोडता त्यां गया. एटलामां केटलाक ब्राह्मणी केटलाक वस्न विगेरे लड्ने ते तरफ नीकळ्या; तेमने पंडितोए तथा वीजा ब्राह्मणोए पूछखुं के-' आ कोने घेरथी लाव्या ? ' एटले तेओए कहुं। के-" राजाना अप्रुक



तेमने पहेरचा योग्य वस्त्रो छाउंछुं, तेटलामां तमे तेमनं स्नान करावी च्यो. " पछी घेठाणीए नेमना कवा ममाणे तेळतुं मईन करीने ते ढोशीने स्नान करावी सुंदर वसवडे शरीर छुछुनुं, शेठेपण सुंदर नस्रो रुपिने तेणीने पहेराव्यां, अने तेणीने सुखासनपर बेसाडी पछी डोमीए क्युं के-' तमारा घरना आंगणावां कोण माटा शब्दथी बोले छे ? ' शेटे जवाव आप्यो के-" पाजी ! कोइक परंदेशी बाह्मण आ-च्यो छे, ते मोटे स्वरे अनेक मुंदर सूक्तो बोले छे, तेनी पासे यणा छोको अवण करे छे. " त्यारे छुद्धा बोली के-" अहो माराज कर्मनो दोप छे. ते लोकोने धन्य छे के जेओ रासिक थड़ने हर्पपूर्वक तेर्ड श्रवण करी आनंद पामे छे. वाकी मारा कानमां तो ते तपावेन्छा सी-सानो रस नांखवा जेवुं छागे छे. " त्यारे शेंटे कहां, के- माजी ! इमणांज तेने वोलतो वंध करुं छुं. " रुद्धा वोली-'शा माटे अंतराय करवो जोइए ? ' क्षेटे कहुं-" तमारा दुःखतुं कारण निवारण करवा-मां अपने कांइ पण हरकत नयी, माटे तेने आ स्थानेथी उठाडुं छुं. ते ब्राह्मण वीजे टेकाणे जहने यांचेशे. अहीं कांइ तेनो लागो नयी. " एम कहीने शेट दोडतो त्यां गया, अने क्रोधयी बोल्पो के-' हे भट्ट! ह्वे अहींथी उठी. आ श्रो अहीं कोलाहल मांडयो छे ? ' ते सांभळीने जे थोडाएक स्रोको वेटा इता, तेओ वोल्या के-" अरे आ उत्तम ब्राह्मण तमारुं कांइ लड़ जाय छे ? ह्युं तमारी पासे कांइ पण मागे छे ? आ तो तमारा भाग्यना योगे साक्षात् ब्रह्मान ब्राह्मणने स्वरूपे आव्या छे. माटे हे शेठ ! तमे डाह्या, निपुण अने शास्त्रज्ञ थहने आर्ड



पण नथी. वळी मारी तो आज्ञाज प्रमाण छे, तेमां कांइ युक्ति कर-वानी नथी. " एम कहीने ते जळपात्र छड्ने घरमांथी नीकळी ज्यां सरस्वती वटी हती त्यां गइ.

लक्ष्मीए सरस्वतीने पूछ्युं के- "हे सरस्वती ! हां समा-चार छे ? आ जगत्मां कोण मोइं ? रे बहेन ! लोकमा तें एवी रुढी पवर्ताची छे के छक्ष्मीना मस्तकपर मार्र स्थान छे, ते वात खरी; परंतु एतो राजाए पोतानी आज्ञा पवर्ताववा माटे एवी रीत करी छे. जो कदाच सुवर्ण के रुषु अक्षरोनी मुद्रा विनातुं वेचातुंज न होय, तो तो तारुं महत्व खरुं, वाकी ते शिवाय तो ते मात्र फूल (वडाइ ) मारवा जेवुंज छे. "ते सांभळीने सरस्वती वोली के-'' अज्ञानवडे अंघ थयेला आ जगत्मां तुंज मुख्य छे, केमके मात्र मुनिजनो विना बीजा सर्वे संसारी जीवो इंद्रिय सुखमां आसक्त छे, तेथी ते सर्वे तारीज अभिलापा करे छे. अने जे कोइ जिनेश्वरना वचनतुं रहस्य जाणनारा छे, तेओज मात्र मारी इच्छा करे छे. " टहमी वोली-'हे सरस्वती! जे कोइ तारी इच्छा करनारा छे, तेओने तो तुं पण पाय अनुकूळ थाय छे, तेनी साथे तुं विचरे छे. तेनी थोटी के यणो प्रयास तुं सफळ करे छे, तेमनुं सांनिध्य तुं मूकती नथी, अने तेमने तुं सर्वथा निराश पण करती नथी; परंतु जे कोइ दााखनो अभ्यास करतां खेद पामीने ताराथी विमुख थाय छै, तेओ तारे। त्याग करे छे, तारुं नाम पण ग्रहण करता नथी. वळी जेओ तारापर अन्यंत आसक्त छे, तेओ पण मने तो इच्छेछेन. शास्निः अभ्यास पण मने मेळवया माटे करे छे. निर्मुण पुरुषोमां अनेक मकारे

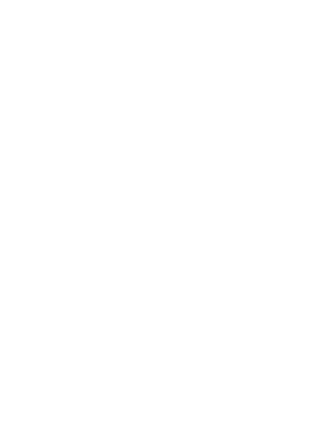


## वयोष्टजास्तपोष्टजा ये च छजा नहुश्रुताः। ते सर्वे धनवुजानां द्वारे तिष्टन्ति किंकराः ॥१॥

अर्थ—जेओ नयभी दृद्ध छ, तपस्याथी दृद्ध छ अने जेओ नहु-श्रुत होनाथी दृद्ध छे, ते सर्वे धनवडे दृद्ध एवा पुरुषोना द्वारमां कि-करनी जेम रहे छे ?

हे सरस्वती ! घणुं शुं कहेवुं ? गरण आवतां सुधी पण पोताना धनने मगट करता नथी, अने मारी इच्छा पण मृकता नथीं. जो कर दाच तारा मानवामां न आवतुं होय, तो हुं तने मत्यक्ष वतावुं, के सर्व माणीओतुं जीवित दश माणोथीं वंघायछुं छे, तेमां धनम्द्रपी अगीयारमो वाह्य माण पण उपचाग्थी कहेळो छे, ते वाह्य माणोस्पी धनने माटे थइने केटलाएक पुरुपो अभ्यंतरना दशे माणोने छोडी दे छे, पण धनने तजता नथीं. मारुं स्वस्त्य जे स्थाने रह्यं (बाटेखुं) होय, ते पर कदाच दक्ष जमे, तो ते पण जलदीथी दृद्धि पामीने पुष्प फळादिकथी मफुछित थाय छे, तथा ज्यां मारुं स्वस्त्य होय, त्यां देवो पण वोलाव्या विना ज जाय छे. माटे हे सुभमा सरस्वती ! मारी साथे चाल, तने कीतुक वतावुं. "

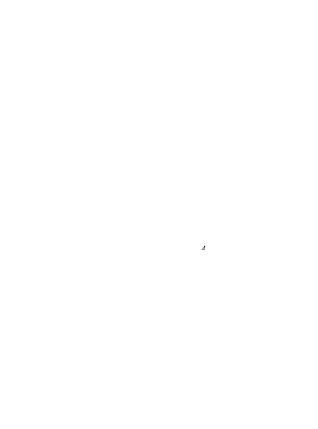
आ प्रमाणे कहीने ते वन्ने देवीओ चाली, अने नगरथी पांच कांश दूर जह एक द्रक्षोना कुंजमां वेदी. पछी छक्ष्मीए देवी मायावडे एकसो ने आठ गज लांबी पहोळी अने त्रण हाथ उंची एवी एक स्ट-चर्ण शिला विक्कवीं. ते शिला रेतीमां हूवी गयेली अने मात्र एक हाथ



जाए कहां-'' ख़ुशीथी तं जा, तारा वाप दादाए त्यां थापण मूकेळी छे, तेथी तेतुं पोटकुं वांधीने घेर आवजे. मारी शंका तारे जरा पण करवी नहीं, के एमांथी भाग देवो पडशे, मारे भाग जोइतो नथी, माटे तारे मने भाग आपवो नहीं, तुं ज छड़ने सुखी था. " एम क हीने वीजो शीघ्रताथी गाम तरफ चाल्यो अने पहेलो तो तेनायी जुदो पडीने ते शिला पासे गयो. त्यां तेणे रेतीमां दरायेली शिलानी एक खूणी जाल्य सुवर्णमय जीयो. ते जीइने मनमां आश्रर्य पामी वि-चार करवा लाग्यो-" अहो ! वहु सारुं थयुं के मारो सोवर्ता न आच्यो. जो कदाच आच्यो होत, तो तेने भाग आपत्रो पडत. मारा ज भाग्यनो उदय थयो छे. हवे हुं जोउं तो खरो, के आ मुवर्ण केट-छुंक छे ? " एम विचारीने ते रेतीने हाथवडे दूर करवा लाग्यो, अने जोयुं तो ते अपरिमित मोटी शिला जोइने अत्यंत हर्पने लीधे गांडा जेवो यइ जइ विचारवा लाग्यो-" अहो मार्र अद्भुत भाग्य छे, के जेथी मने आर्चुं निधान प्राप्त थयुं. मारापर आजे दैव तुष्टमान थयुं छे. आटला लामयी तो हुं राज्य करीश. आ धनना प्रभावधी हाथी, घोडा, पायदळ विगेरे सन्य तैयार करीशा पढ़ी बळवान थइने अमुक देश जीतीने त्यां राज्य करीश. " आ ममाणे मधना घडाने उपाडनार शेखसछी पुरुपनी जेम आर्तध्यानमां तछीन यहने ते फरीयी विचार करवा लाग्यो के-' कोइ पण उपायथी आ सुवर्णने हुं ग्रहण करूं. ? आ ममाणे विचारतो ने न्यां ज उभी रही अने तर्क वितर्क्षमां गर्क घेंडें गयो. बीजो सेवक के ने गाम तरफ चाल्यो गयो हतो, ते केटलेक



घोल्यो के-" तारो आगां कांइ पण लाग भाग नथी, आ सर्व पार्र छे, हुं ज ग्रहण करीश. केमके में तो तने प्रथमधील कहां हतुं, के है भाइ! चालो, आपणे त्यां जड़ने जोइए के ते तेजस्वी वस्तु हुं छे? त्यारे तें जवाव आप्यो हता के तुं ज जा, तारा पूर्वश्रोए थापण मूर्की हमें, तेनुं पोटकुं वांधीने घेर आवजे, मारे भाग जोइतो नथी, माटे मने आपीश नहीं. आ प्रमाणे कहीने तुं तो आगळ चालतो थयो हतो. अने हवे पाछो भाग मांग छे, तो हां तारुं ज कहेलुं तुं भूळी गयो ? हुं तो साहस करीने अहीं आन्यो. मारा पुण्यना उदयथी मने आ पाप्त थयुं छे, तेथी आ पार्र ज छे. तार्र आमां शुं लागे ? जेमं आन्यो तेमज पाछो घर चाल्यो जा. आमांथी एक कोडीना मूल्य जेटछुं पण तने आपीश नहीं. फोगट शा माटे उभो छे ? अहींथी चारयो जा. नहीं तो मारे अने तारे मेत्री रहेशे नहीं. " आ प्रमाणेनां तेनां वच-नो सांभळीने छोभने वश पडेलो बीजो पण क्रोधथी वील्यो के-"अरे मूर्खराज ! केम मारो भाग नहीं ? हुं अने तुं एक राजाना ज सेवको छीए. राजाए एकज कार्य माटे आपणने मोकल्या छे. तेमां लाभ के हानि, सुख के दुःख जे कांड् थाय, ते आपणे वन्नेने लेवातुं अने स-इन करवार्तुं छे. एक ज स्वामीए एकज कार्यने माटे फरमावेला से-वकोने जे कांइ लाभ थाय छे, ते सर्व वहेंचीने ज लेवाय छे, ए म-माणे राजनीति छे, ते हुं तुं भूली गयो ? माटे हुं तो तारा माथापर हाथ मूकीने आमांथी अधीं भाग लड्झा तुं कड़ निद्रामां उंचे छे ? शुं भा जगत् मनुष्यरहित यइ गयुं छे के जेथी तारुं ज कहे छुं थशे ?



सार्ह, अमे तपारा सेनकोज छीये, आप ने आज्ञा करशो ते ममाणे अमे करशुं. " त्यारे जाटेले तेमने ते शिला देखाडीने नहुं के-" में तपस्यानी शक्तिवंडे वनदेवतानुं आराधन कर्धु, त्यारे तेणे मसन थइने आ निधि वताच्यो छे. तेथी इवे आना ककडा करीने आनो तीर्थीमां ट्यय करवो छे, माटे तमे आना ककडा करो. " आ प्रमाणे ते जटि-छनी वाणी सांभळीने तथा ते शिलाने जोइने लोभसागरमां <sup>मग्न</sup> थयेला ते चोरे। परस्पर विचार करवा लाग्या के-" हे भाइ ! जटिल-नी दंभरचना जाणी के ? ते कहे छे के मने देवताए निधि देखाडचो. पण आ तो पूर्व कोइ राजाए सुवर्णना रसधी आ शिला वनावीने पृथ्वीमां निधिपणे स्थापन करी इशे, पछी घणो काळ जवाथी मेघ-ष्टि विगेरे यवायी उपरनी माटी घोवाइ गइ हवे अने पवनथी तेनो एक खूणो उघाडो ययो हशे, एवामां आ जिटल भमतो अहीं आवी चढचो, अने आ शिलानो खूणो जोइने कोभयी तेने पोतानी मानीने रहों छे. आ आखी शिलाने तो ते लड़ शके तेम नथी, तेथी तेना ककडा कराववा माटे आपणी पासे दंभरचना करीने आपणने टगवा माटे कहे छे के तमने दरेकने हजार हजार महोर आपीश, पण अर्थो त्रीजो, चोथो, पांचमो के सातमो भाग वापीश, एम तो कांइ कहेती ज नथी; सर्वे हुं एकलोज लड़ जड़श एम कहे छे. शुं आ एना वापर्तु धन छे के जिथी आ प्रमाण आपणने छतरे छे ! माटे आने हणीने आपणेज सर्वे लड़ लड़ए. " ते सांभळी तेमांना एक जणे कहां के-'आ तपस्वी छे, एने केम मराय ?' त्यारे बीजो बोल्यो—" आतुं

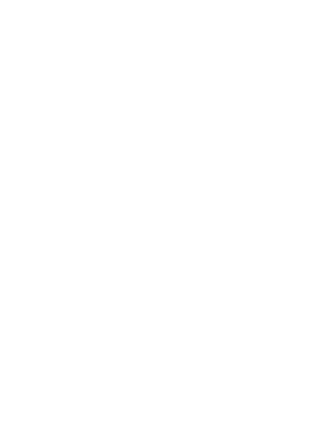


सारुं. अमे तमारा सेवकीज छीये. आप ने आज्ञा करशो ते ममाणे अमे करशुं. " त्यारे जाटिले तेमने ते शिला देखाडीने कहां के-" में तपस्यानी शक्तिवडे वनदेवतानुं आराधन कर्युं, त्यारे तेणे प्रसन थइने आ निधि वताव्यो छे. तेथी इवे आना ककडा करीने आनो तीर्योगां ष्यय करवो छे, माटे तमे आना ककडा करो. " आ प्रमाणे ते जटि-छनी वाणी सांभळीने तथा ते शिलाने जोइने लोभसागरमां मग्र थयेला ते चोरे। परस्पर विचार करवा लाग्या के-" हे भाइ! जटिल-नी दंभरचना जाणी के ? ते कहे छे के मने देवताए निधि देखाडची. पण आ तो पूर्व कोइ राजाए सुवर्णना रसथी आ शिला वनावीने पृथ्वीमां निधिपणे स्थापन करी हशे, पछी घणो काळ जवाथी मेव-ष्टिष्टि विगेरे थवाथी उपरनी माटी घोवाइ गइ हत्रे अने पवनथी तेनो एक खुणो उघाडो ययो ह्वो, एवामां आ जटिल भमतो अहीं आवी चढचो, अने आ शिलानो खुणो जोइने छोभधी तेने पोतानी मानीने रह्यों छे. आ आखी शिलाने तो ते लड़ शके तेम नथी, तेथी तेना क्कडा कराववा माटे आपणी पासे दंभरचना करीने आपणने टगवा माटे कहे छे के तमने दरेकने हजार हजार महोर आपीश पण अर्थी त्रीजो, चोथो, पांचमो के सातमो भाग आपीश, एम तो कांइ कहेती ज नथी; सर्वे हुं एकलोज लइ जइश एम कहे छे. शुं आ एना वापर्त धन छे के जेथी .आ प्रमाणे आपणने छेतरे छे ! माटे आने हणीने आपणेज सर्वे छड़ छड़ए. " ते सांभळी तेमांना एक जणे करां के-'आ तपस्वी छे, एने केम मराय ?' त्यारे बीजी बोल्यों-" आउं





नर अने सर्प पोतपाताने स्थाने गया त्यार पछी बाह्मण शंकामां पडयो सतो विचार करवा लाग्यो के–' आ सोनीने कार्ढ के नहीं ?*'* एवा संशयरुपी हिंडोलापर तेनुं मन हींचकवा लाग्युं. ते वखते कूवानी अंदर रहेलो सोनी बोल्यो के-'हे ब्राह्मण ! लोकोने उद्देग करनारा अने विवेकरहित एवा वाघ, वानर अने सर्पनो उद्धार तमे तरतज कर्यो, अने मने काढतां विलंब केम करो छो ? हुं तो मनुष्य छुं. शुं सपे, वानर अने वाघथी पण हुं वबारे दुए छुं ? हुं हुं तमारा उप-कारने भूळी जड्श ? माटे मने काढो; जन्मपर्यंत हुं तमारो सेवक य-इने रहीश. ' ते सांभळीने सरळ प्रकृतिवाळा ब्राह्मणे विचार्युं के-' आ सोनी सत्य कहे छे. धुं आ मतुष्य तिर्थेचथी पण इळको छे ? जे यवातुं होय ते याओ. उपकारीए पंक्तिभेद राखवो ए योग्य नथी. वळी ते वाघ विगेरेनुं कहेनुं पण सत्य छे, परंतु मारे एनी साथे छुं काम छे ? हुं दूर देशमां रहुं छं, अने आ तो आ देशनो ज रहीश छे, ते मने ही करशे ? ' एम विचारीने ते ब्राह्मणे सोनीने पण वहार काढ्यो. त्यारे सोनीए ब्राह्मणने प्रणाम करीने कहुं के- 'तमे मने जीवित दान आप्युं छे माटे मारापर कृपा करीने मारे घेर आवजो; हं अप्रक गाममां अप्रक शेरीमां रहुं छुं. हुं तमारी ययाशक्ति भक्ति करीश. ' ए प्रमाणे वाणीनो विलास करीने ते गयो। पछी पेलो ब्रा-हमण पण अडसट तीर्थमां अटन करतो यात्रा करीने केटळेक काळे पाछी फर्यो अनुक्रमे तेज अरण्यमां ते आज्यो देवयोगे बाघे तेने जोयो, अने ओळख्यो के ' आ मारो जीविनदाता महा उपकारी छे.'



इरहारे, भान मारे देर भनिति भाग गाँउ गाउँ, भाग मारे भागिये कामीन गाप पोपानी में हे व भाषी, भने भाग मारा मर्ने मनीर्यो सफल यपार के नेपी भाग नुपास दर्भन मने थुपार रे एम बोल्ली ने मोनी बादाणना पगमां परतो. शणवारे उठीने हाथ जोडी निनंति करवा लाग्यो के–' हे स्वामी ! मारे वेर पत्राची, आपनां पगठां करीने मार्क घर पनित्र करो. ' ए प्रमाण शिष्टाचार पूर्वक तेने पोताने धेर लड गयो। मुख्य बाह्मण तेना चाडु वचनी सांभळीने प्रसन्न थड् विचा-रवा लाग्यो के-' आ तो अत्यंत गुणग्राही जणाय हो, पारा करेला उपकारने भूली गयो नथी, तेथी खानदान कुळतो जणाय छे-आनी पासे मारे बा माटे आंतर राख्युं जोडए ? आ मारुं सर्व काम करी आपक्षे; माटे बाघे आपेला सर्व अलंकारी हुं आने ज देखाई-आना ज द्यायमां आधीने तेतुं रोकड नाणुं करुं. ' एम विचारीने ते वोल्यो के-' हे भाड! मारी पासे कोडए आपेलां घरेणां छे, ते वेचीने मने नाणां करी आप. ' सोनी वोल्यो-' मने वतावो, एटले आपतुं कार्य हुं शीरसाटे करी आपीश. वाद्मणे ते सर्व घरेणां तेने वताव्यां-ते जोड़ने सोनीए तेने ओळख्यां के-' अहो ! राजगादीने योग्य थ-येलो राजकुमार वक्र शिक्षावाळा अश्ववडे दूर वनमां एइ जवायो हतो, त्यां तेने कोइए मारी नांख्यो हतो. तेने माटे राजाए घणी शोध करी, पण हजु सुधी कांइ पण पत्ती लाग्यो नथी तेथी राजाए पटह वगडा-च्यो छ के-जे कोइ कुमारना जीववानी के मरणनी शोध करी लावशे तेना पर हुं घणो प्रसन्न थइश, अने मोडं इनाम आपीश आ प्रमाणे

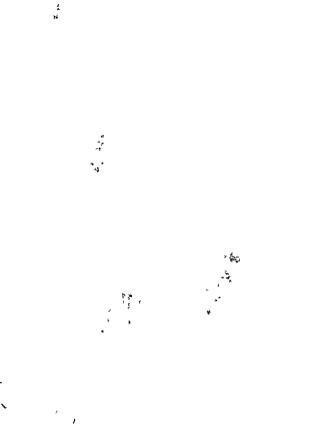


आव्या. राजाए मात्र नजरे जोइने ज तेनो वध करवानी आज्ञा करीः त्यारे राज सेवको ते बाह्मणनुं अर्धु मस्तक मुंडावी, गधेडापर वेसाडी, मारता मारता नगरमां फेरववा छाग्या. ते वखते ब्राह्मण मनमां विचार करवा लाग्यो के—' में वाघ विगेरे त्रणेतुं वचन मान्धुं नहीं, तेतुं फळ मने मळ्युं. ' आ प्रमाणे ते विचार करतो हतो, तेवामां तेने हक्षपर वेटेला पेला वांदराए जोयो अने ओळख्यो, तेथी ते विचारवा लाग्यो के-' अहो ! आ तो अमारा त्रणेनो उपकारी छे, तेनी आवी अवस्था केम थइ ? ' पछी ते वानरे लोकोना कहेवापरथी वधी वात जाणीने विचार्यु के-' खरेखर आ बाह्मणने पेला सोनीए ज दुःखमां नांरुयो जणाय छे, अने ते ज आने मराधी नांखशे. माटे आ ब्राह्मण कीड् उपायथी जीवे एम करुं. ' एम विचारतो ते वानर सर्प पासे गयो, अने तेने सर्व द्वतांत कहारे. ते सांभळी सर्प वोल्यो-' चिंता न कर, सर्व सार्रु थशे. ' एम कहीने ते संप राजाना जद्यानमां जडने राजाना कुळना वीजरूप कुमारने दस्यो तरत ज ते कुमार शवनी जेम चेतना रहित यहने पृथ्वीपर पडची. राजपुरूपीए बूमी पाडतां पाडतां राजा पासे जड़ने कहां. राजा पण 'हवे हां करवं ?' ए विचारमां मूह वनी गयो. अनेक मंत्रवादीओने बोलाव्याः तेमणे पोताना भंत्रवळथी जळतुं मार्जन विगेरे कर्ये, परंत ते सर्व नप्रंसकने विपे तरणीना विटासनी जेम निष्फळ थयं. राजाना चारे हाथ हेटा पटचा. राजा निराश थयो अने विलाप करवा लाग्यों। ते वस्त्रते फोइए कलुं के-'ह स्वामी! नगरमां पटह बगडाववो एटले कोइ पण गुणवान् मळी आवशे. 'ते

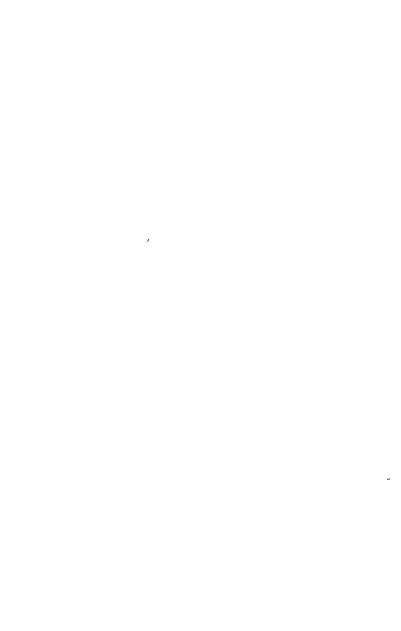














TOWNER THE THE